The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com

गोरखपुर नगरीय प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि

मोहम्मद आसिम
शोध छात्र(जे.आर.एफ.)
भूगोल विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर।

सरांश -

गोरखपुर नगरी क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख नगर है, जो अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक विशेषताओं के लिए विख्यात है। यह नगर राप्ती नदी के किनारे स्थित है, जो इसे उपजाऊ मैदानी क्षेत्र का हिस्सा बनाती है। गोरखपुर का प्रभाव क्षेत्र केवल नगर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों, कस्बों और बाजारों तक विस्तृत है। इस प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन मुख्यतः आर्थिक गतिविधियों, यातायात सुविधाओं, शैक्षणिक संस्थानों और धार्मिक–सांस्कृतिक महत्व के आधार पर किया जाता है। गोरखनाथ मंदिर, गीता प्रेस और रेलवे मंडल जैसे केंद्र यहाँ की पहचान को और सशक्त बनाते हैं। भौगोलिक दृष्टि से गोरखपुर गंगा के मैदानी भाग में स्थित है, जहाँ उपजाऊ दोमट मिट्टी, समशीतोष्ण जलवायु और नदियों की उपलब्धता कृषि एवं मानव बस्तियों के विकास के लिए अनुकूल है। यही कारण है कि यह क्षेत्र न केवल स्थानीय आबादी को आकर्षित करता है, बल्कि व्यापार, शिक्षा और प्रशासनिक गतिविधियों का भी प्रमुख केंद्र बना है। इस प्रकार गोरखपुर नगरी का सीमांकन उसके भौगोलिक परिवेश तथा सामाजिक–आर्थिक प्रभाव क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए किया जाता है, जिससे यह क्षेत्रीय विकास का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरता है।

संकेत शब्द– *भौगोलिक विशेषताओं, धार्मिक–सांस्कृतिक, सामाजिक–आर्थिक ।*

विधि तंत्र

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन गोरखपुर,फैजाबाद,इलाहाबाद विश्वविद्यालय सहित, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ,अलीगढ़ मुस्लिम

विश्वविद्यालय,जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय सहित जिला सांख्यिकी कार्यालय,मंडल सांख्यिकी कार्यालय, जिला जनगणना विभाग, नगर निगम गोरखपुर से प्राप्त किया गया।जाएगा प्राथमिक आंकड़ों का संकलन सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया है।सर्वप्रथम प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर अध्ययन क्षेत्र गोरखपुर नगरी प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन किया गया है।इसके लिए प्राथमिक नगरीय सेवाओं को लिया गया ,जिनमें दैनिक अभिगमन ,दुग्ध आपूर्ति सब्जी आपूर्ति, सेकेंडरी शिक्षा सेवा का चयन करके क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा प्राथमिक सूचनाऐ प्राप्त की गई है

गोरखपुर नगरीय प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन

प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर नगरीय प्रभाव क्षेत्र की सीमा का निर्धारण।

चयनित आधार : गोरखपुर नगरी प्रभाव क्षेत्र के निर्धारण हेतु नगर केंद्र और समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्र के मध्य प्रत्यक्ष संबंध को व्यक्त करने वाले निम्न चरों का चयन किया गया है–

1. दैनिक अभिगमन क्षेत्र
2. दूध आपूर्ति क्षेत्र
3. सब्जी आपूर्ति क्षेत्र
4. टैक्सी, टेमपो, सिटी बस सेवा क्षेत्र
5. माध्यमिक एवं सेकेंडरी स्कूल शिक्षा सेवा क्षेत्र
6. दैनिक समाचार पत्र सेवा क्षेत्र

उपरोक्त 6 चरों से संबंधित प्राथमिक सूचनाओं का संग्रह क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया है इसके लिए नगर केंद्र से बाहर नोडल केंद्रो पर जाकर प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से आने वाले मजदूर विशेष कर साइकिल , पैदल, महानगरी बस सेवा से अभिगमन कर्ताओं से उनके पता और दूरी तथा दिशा को ज्ञात किया गया है।इसी तरह दूध लाने वाले ,सेकेंडरी स्तर के शिक्षार्थियों से साक्षात्कार लिए गए हैं, सिटी बस सेवा एवं दैनिक समाचार पत्र सेवा क्षेत्र की दूरी दिशा का पता किया गया है।गोरखपुर, कुशीनगर ,महाराजगंज,का ग्राम स्तर का मानचित्र लेकर नगर केंद्र से विभिन्न चरों को व्यक्त करने वाले ग्रामों को तीर से प्रदर्शित किया गया है।अंत में जिस दिशा और स्थान से औसत से अधिक ग्राम चिन्हित है उनकी सीमाओं को लेकर प्रत्येक चर की बाह्य सीमा खींची गई है।अंत में प्रत्येक चर की बाह्य सीमाओं को एक दूसरे पर अध्यारोपित किया गया है अध्यारोपित करने के बाद यदि कोई सीमा बाहरी किसी भी ब्लॉक में इंटर की है तो उस संपूर्ण ब्लॉक को ले लिया गया है चरों की सीमाएं किस भी ब्लॉक में गई है उनको चुनकर अध्ययन क्षेत्र (गोरखपुर नगरी प्रभाव क्षेत्र) का निर्धारण किया गया है। नगरी प्रभाव क्षेत्र को अंग्रेजी में अमलैंड (Umland) के नाम से भी जाना जाता है।

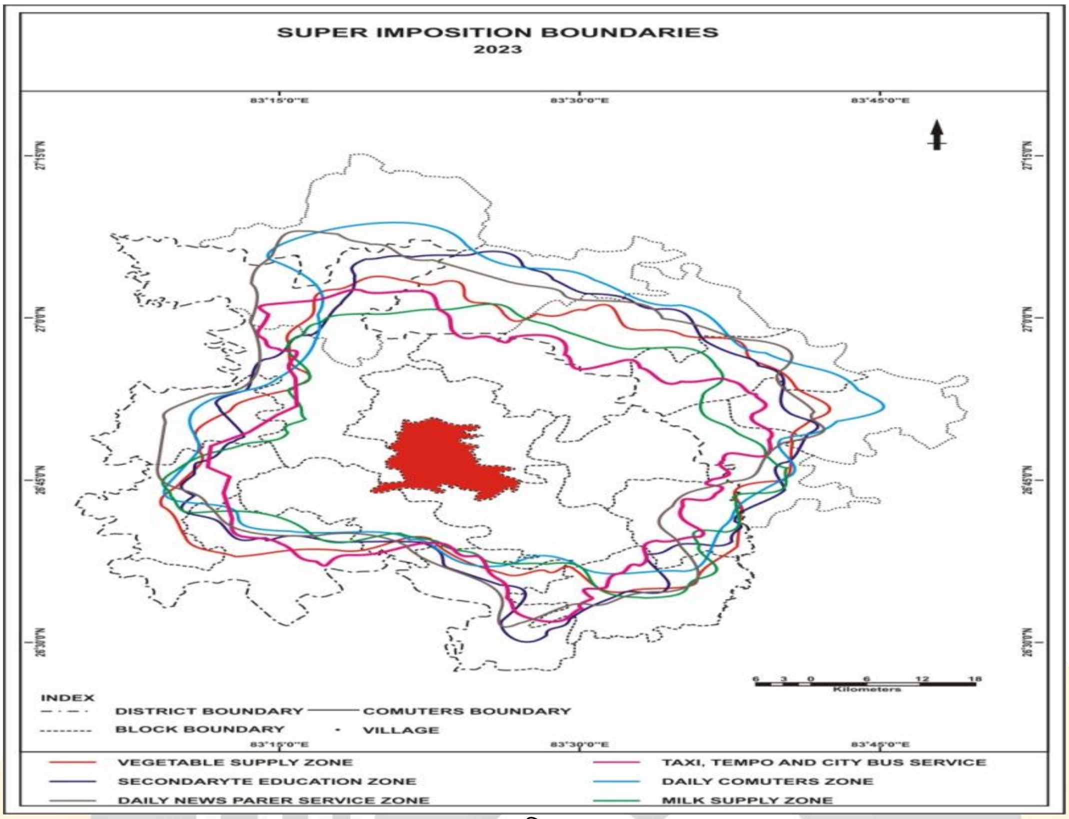
SUPER IMPOSITION BOUNDARIES
2023
83°15'0"E
83°30'0"E
83°45'0"E
27°15'0"N
27°0'0"N
26°45'0"N
26°30'0"N
6 3 0 6 12 18
Kilometers
INDEX
DISTRICT BOUNDARY
COMUTERS BOUNDARY
BLOCK BOUNDARY
VILLAGE
VEGETABLE SUPPLY ZONE
SECONDARYTE EDUCATION ZONE
DAILY NEWS PARER SERVICE ZONE
TAXI, TEMPO AND CITY BUS SERVICE
DAILY COMUTERS ZONE
MILK SUPPLY ZONE

चित्र 1:

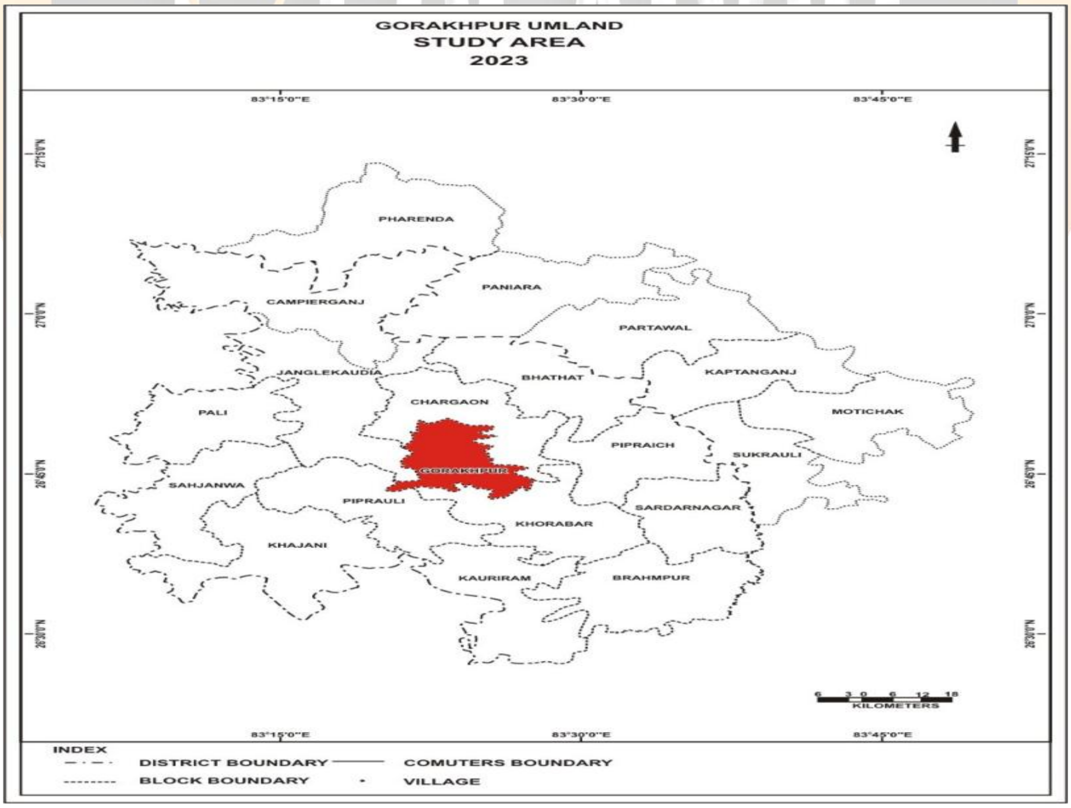
GORAKHPUR UMLAND
STUDY AREA
2023
83°15'0"E
83°30'0"E
83°45'0"E
27°15'0"N
27°0'0"N
26°45'0"N
26°30'0"N
PHARENDA
PANIARA
CAMPIERGANJ
PARTAWAL
JANGLEKAUDIA
BHATHAT
KAPTANGANJ
CHARGAON
PALI
MOTICHAK
PIPRAICH
SUKRAULI
GORAKHPUR
SAHJANWA
PIPRAULI
SARDARNAGAR
KHORABAR
KHAJANI
KAURIRAM
BRAHMPUR
6 3 0 6 12 18
KILOMETERS
INDEX
DISTRICT BOUNDARY
COMUTERS BOUNDARY
BLOCK BOUNDARY
VILLAGE

चित्र 2:

तालिका 1:गोरखपुर नगरीय प्रभाव क्षेत्र में सम्मिलित विकासखण्ड उनके क्षेत्रफल, गांवों की संख्या एवं जनसंख्या (2011)

क्रमांक	विकासखण्ड का नाम	कुल क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	गांवों की संख्या	कुल जनसंख्या
1	कैंपियरगंज	246.39	142	274914
2	जंगल कौड़िया	227.92	186	235235
3	पाली	143.67	171	144080
4	सहजनवा	155.5	151	151488
5	पिपरौली	154.68	154	183992
6	चरगांवा	132.76	59	186787
7	भटहट	164.63	97	193535
8	खोराबार	161.81	92	190891
9	पिपराइच	170.12	86	188645
10	सरदारनगर	135.9	78	178005
11	ब्रह्मपुर	220.38	121	193681
12	खजनी	266.71	244	196763
13	कौड़ीराम	168.5	215	176345
14	कप्तानगंज	182.05	95	204569

15	मोतीचक	170.71	83	195065
16	सुक्रोली	159.43	104	189203
17	फरेंदा	171.89	100	199137
18	पनियरा	201.56	92	222702
19	परतावल	197.53	105	237917
	योग	3432.14	2375	3742954

स्रोत–जिला सांख्यिकीय पत्रिका 2023

गोरखपुर नगरीय प्रभाव क्षेत्र

गोरखपुर नगरी प्रभाव क्षेत्र की सीमा का निर्धारण दूध, सब्जी आपूर्ति, शिक्षा, परिवहन और दैनिक अभिगमन जैसे मानदंडों के आधार पर किया गया है। इसका विस्तार पश्चिम में सहजनवा से आगे 20 किमी, उत्तर में नौतनवा मार्ग पर 40 किमी, दक्षिण में कौड़ीराम से 35 किमी, पूर्व में हाटा बाजार (कुशीनगर) तक और दक्षिण–पूर्व में चौरी–चौरा से गौरी बाजार तक लगभग 35 किमी तक फैला है।इस क्षेत्र में कुल 19 विकासखंड और 2375 गाँव सम्मिलित हैं। गोरखपुर जिले के सहजनवा, पाली, पिपरौली, जंगल कौड़िया, ब्रह्मपुर, खोराबार, कौड़ीराम, कैंपियरगंज, खजनी आदि, कुशीनगर जिले के कप्तानगंज और मोती करौली, तथा महाराजगंज जिले के फरेंदा, पनियारा और प्रतापगढ़ विकासखंड इसमें शामिल हैं।

गोरखपुर नगरीय प्रभाव क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि

संरचना एवं उच्चावच

अध्ययन क्षेत्र भूमि की संरचना की दृष्टि से उत्तर के विशाल मैदान का ही एक खंड है यह सरयू पार मैदान के पूर्वी भाग में रोहिण प्रति आमीन नदियों के नीचे से निर्मित मैदान है। यह दक्षिणी परायदीप एवं उत्तर में हिमालय के मध्य में स्थित भूसन्नति में पुलिस स्टेशन कल से अब तक गंगा तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा ले गए जालोर्णिक क्षेत्र की दीर्घकालिक प्रक्रिया के द्वारा निर्मित हुआ है। धरातली बनावट के अध्ययन हेतु जनपद गोरखपुर महाराजगंज तथा कुशीनगर के भूपत्त को देखने से स्पष्ट है की अध्ययन क्षेत्र में स्मोक रेखाओं का अभाव है। इसकी भूमि की संरचना के तत्व नदी नाला लाल पोखर तटबंध आदि है जो कृषि एवं परिवहन आदि को प्रभावित करते हैं।राप्ती, रोहिण ,आमी, की परिवर्तनशील धारा के कारण बाढ़ क्षेत्र, छाडन झील आदि भूदृश्य यहां पर उत्पन्न हुए हैं।चित्रा संख्या 3.2 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में कहीं भी समुद्र तल से 100 मीटर से अधिक ऊंचाई नहीं मिलती है। दक्षिणी भाग में 75 मीटर से भी काम ऊंचा है तथा उत्तरी भाग में 90 मीटर से अधिक ऊंचाई मिलती है और मध्यवर्ती भाग में कम ऊंचाई

मिलती हुई है। मध्यवर्ती भाग में नदी घाटियों को छोड़कर विशेष संपूर्ण भाग में ऊंचाई लगभग एक समान मिलती है। इसकी समुद्र तल से औसत ऊंचाई 82 मीटर है। अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में भी ऊंचाई 90 मीटर से अधिक मिलती है।

अपवाह तंत्र

अध्ययन क्षेत्र का सामान्य अपवाह उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व दिशा की ओर है।इस क्षेत्र के उत्तरी भाग में उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर एवं उत्तरी भाग से दक्षिण पूर्व की ओर तथा पूर्व से दक्षिण पूर्व की ओर नदियां बहती है।दक्षिणी भाग में पूर्व से दक्षिण पूर्व की ओर नदियां बहती हैं।अध्ययन क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण नदी राप्ती नदी है जो गोरखपुर जनपद में जंगल कौड़िया विकासखंड मे प्रवेश करती है तथा पिपरौली कौड़ीराम गगहा, बड़हलगंज विकासखंड होते हुए बरहज के पास घाघरा नदी में जाकर मिल जाती है।राप्ती की सहायक नदियों में सबसे महत्वपूर्ण रोहिन नदी है जो अध्ययन क्षेत्र में महाराजगंज जनपद के नौतनवा विकासखंड के विनायकपुर ग्राम में प्रवेश कर अध्ययन क्षेत्र के फरेंदा विकासखंड से होती हुई कैंपियरगंज जंगल कौड़िया सदल तहसील होती हुई गोरखपुर जनपद मुख्यालय के पश्चिम डोमिंगगढ़ के दक्षिण में रात्रि नदी में मिल जाती है।छोटी गंडक नदी अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी क्षेत्र में मोती चक कप्तानगंज मैं बहते हुए दक्षिणी भागों में कुशीनगर देवरिया में प्रवाहित होते हुए घाघरा नदी में जाकर मिल जाती है।

मिट्टी

मिट्टी की दृष्टि से भी अध्ययन क्षेत्र विविधता लिए है । मिट्टी में पाई जाने वाली प्रादेशिक विविधताओं का संबंध मुख्यतः चट्टानों के प्रकार जलवायु प्राकृतिक वनस्पति आदि पर निर्भर करता है। अध्ययन क्षेत्र की मिट्टी नदियों द्वारा लाए गए पदार्थों के लगातार निक्षेपित होने से बनी है इस क्षेत्र की मिट्टी अधिकांशत दोमट है नदी के किनारे बलुई और पूर्वी भाग में भाट, उत्तरी भाग में चिकनी मिट्टी, पश्चिमी एवं दक्षिण पूर्वी भाग में बलुई दोमट एवं दक्षिणी भाग में क्षारीय मिट्टी पाई जाती है।

अध्ययन क्षेत्र की मिट्टियों को मुख्यतः 5 भागों में बांटा जा सकता है।दोमट बलुई दोमट चिकनी मिट्टी भाक्षारीय मिट्टी

जलवायु एवं प्राकृतिक वनस्पति

जलवायु की विशेषता – अध्ययन क्षेत्र उष्णकटिबंधीय जलवायु में स्थित है, इसलिए यहाँ देश की सभी प्रमुख जलवायु विशेषताएँ मिलती हैं।

मुख्य कारक तापमान – मई सबसे गर्म और जनवरी सबसे ठंडा महीना है।

तीन ऋतुएँ – यहाँ शीत (नवंबर–फरवरी), ग्रीष्म (मार्च–जून) और वर्षा (जून–अक्टूबर) ऋतु स्पष्ट रूप से पाई जाती हैं।

शीत ऋतु – जनवरी में तापमान 5° से 20°C तक रहता है।

ग्रीष्म ऋतु – मई सबसे गर्म महीना होता है, तापमान 45°ϵ तक पहुँचता है और लू चलती है।

वर्षा ऋतु – दक्षिण–पश्चिम मानसून जून से अक्टूबर तक सक्रिय रहता है। कुल वर्षा का लगभग 90% इसी समय होती है।

बाढ़ की समस्या – वर्षा ऋतु में बाढ़ आती है, जिससे भारी जन–धन हानि होती है।

प्राकृतिक वनस्पति (प्राचीन काल) – क्षेत्र पहले बीहड़ और घने जंगलों से आच्छादित था।

वन कटाव – बढ़ती आबादी, नगरीकरण और कृषि विस्तार के कारण जंगल घट गए।
वर्तमान वन क्षेत्र – पूर्वी और उत्तर–पूर्वी हिस्सों में संरक्षित वन पाए जाते हैं।
इमारती वृक्ष – सागवान, शीशम, अर्जुन, गूलर, जामुन, आम, यूकेलिप्टस और बबूल प्रमुख हैं।
फलदार वृक्ष – आम, महुआ, कटहल और अमरूद आमतौर पर मिलते हैं।
अन्य वनस्पति – छोटे वृक्ष, लंबी व छोटी घासें भी पाई जाती हैं।

जनसंख्या उनका वितरण एवं घनत्व

अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या 4416400 (नगर निगम सहित) है। (2011 की जनगणना के अनुसार)अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या का वितरण स्वरूप आसमान है। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वितरण को यहां के अपवाह तंत्र मिट्टी एवं जंगलों ने बहुत प्रभावित किया है। क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी भाग कैंपियरगंज तथा पश्चिमी भाग जंगल कौड़िया में सघन जनसंख्या वितरण मिलता है, जिसका प्रमुख कारण इस क्षेत्र की उपजाऊ भूमि एवं अन्य सुविधाएं हैं, जबकि कप्तानगंज चारगांव खजनी पनियारा में भी जनसंख्या का केंद्रीकरण देखने को मिलता है।चारगांव और जंगल कौड़िया में सघन जनसंख्या का वितरण गोरखपुर नगर क्षेत्र के समीप होने के कारण पाया जाता है।फरेंदा पाली सजनवा आदि विकास करो में कम जनसंख्या का वितरण देखने को मिलता है इसका प्रमुख कारण यातायात के साधनों का विकसित न होना है।इससे स्पष्ट होता है कि दक्षिणी और दक्षिण पश्चिमी भागों में उत्तरी और उत्तरी पूर्वी तथा मध्यवर्ती भागों की अपेक्षा कम जनसंख्या पाई जाती है।अध्ययन क्षेत्र का औसत जनसंख्या घनत्व 1207 है।सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व चरगावां (1406) में है जिसका प्रमुख कारण उसका नगर के बिल्कुल समीपवर्ती क्षेत्र में स्थित होना है। जबकि न्यूनतम जनसंख्या का घनत्व खजनी (737) विकासखंडमें देखने को मिलता है। जिसका प्रमुख कारण अध्ययन क्षेत्र में उसका सर्वाधिक क्षेत्रीय विस्तार (266–71 वर्ग किमी०) है, एवं अन्य प्रकार की सुविधाओं की कमी का होना है।

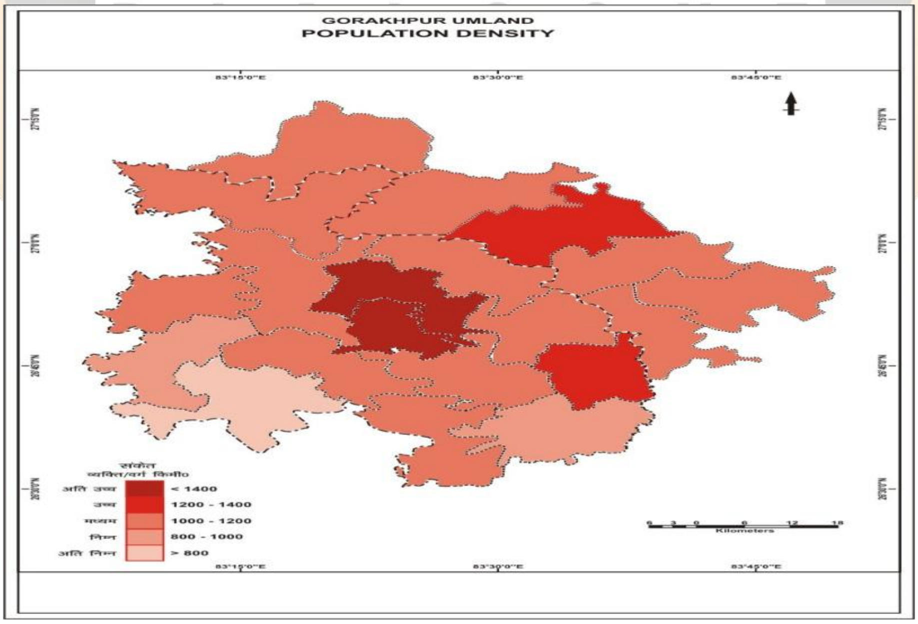

चित्र 3

मानव अधिवास एवं उद्योग

तलिका 2.1 के अनुसार सर्वाधिक 244 अधिवास खजनी विकासखंड में पाए जाते हैं।इसके बाद कौड़ीराम (215), जंगल कौड़िया (186), पाली (171) और कैंपियरगंज (142) प्रमुख हैं।न्यूनतम अधिवास सरदार नगर (78) में हैं।पिपराइच (86), कप्तानगंज (95), मोतीचक (83) और पनियारा (92) भी कम अधिवास वाले क्षेत्र हैं।अध्ययन क्षेत्र में कृषि, खनिज और निर्माण आधारित उद्योग मौजूद हैं।चीनी उद्योग, तेल उद्योग, खाद्य पदार्थ, दुग्ध और बेकरी उद्योग सबसे महत्वपूर्ण हैं।यह क्षेत्र प्राचीन काल से चीनी उद्योग का प्रमुख केंद्र रहा है।रोजगार के अवसर वस्त्र, उर्वरक, आयरन, लघु व कुटीर उद्योगों से भी मिलते हैं।

यातायात

अध्ययन क्षेत्र आर्थिक रूप से पिछड़ा है, जहाँ सड़क नेटवर्क का वास्तविक विकास सातवें दशक के बाद तेजी से हुआ। रेलवे लाइनें स्वतंत्रता से पहले ब्रिटिश शासन की नीतियों के तहत बिछाई गई थीं।राष्ट्रीय राजमार्ग एनण्एचण् 28 इस क्षेत्र की मुख्य धुरी है, जो पश्चिम में लखनऊ और पूर्व में बिहार से जुड़ता है। इसकी एक शाखा आजमगढ़ और बनारस की ओर जाती है। राज्य राजमार्गों में से एक गोरखपुर–नौतनवा मार्ग हैए जिसकी उपशाखा बलरामपुर तक पहुँचती है। दूसरा मार्ग दक्षिण की ओर गोरखपुर को बनारस और आजमगढ़ से जोड़ता है।रेलवे नेटवर्क चार प्रमुख दिशाओं में फैला है। पहला मार्ग गोरखपुर से पश्चिम की ओर बस्ती जाता है। दूसरा गोरखपुर–देवरिया मार्ग है। तीसरा मार्ग कप्तानगंज होकर बिहार तक पहुँचता है। इसके अलावा गोरखपुर से नौतनवा तक एक छोटी लाइन भी हैहालाँकिए दक्षिणी क्षेत्र में रेल मार्ग का अभाव है। गोरखपुर से मऊए आजमगढ़ और बनारस की ओर सीधा रेल संपर्क नहीं है, जिससे परिवहन और आर्थिक विकास बाधित होता है। इसलिए दक्षिण दिशा में नए रेलमार्ग का निर्माण अत्यंत आवश्यक हैए ताकि क्षेत्रीय संतुलन और कनेक्टिविटी को मजबूती मिल सके

संदर्भ सूची

- Singh, R.L. (1956) – Urban Hierarchy in the Umland of Banaras, B.H.U. Journal of Scientific Research.
- Singh, Ujagir (1966) – Allahabad: A Study in Urban Geography.
- Singh, U. (1976) – Urban Fringe in KAVAL Towns, in R.L. Singh (Ed.), Applied Geography, N.G.S.I., Varanasi.
- Sinha, M.M.P. (1976) – The Impact of Urbanization on Land Use in the Rural Urban Fringe, Concept Publishing Company, Delhi, 1976, pp. 75–109.
- Lal, H. (1973) – Urban Fringe: An Analysis of the Concept, Uttar Bharat Bhugol Patrica, Vol. 9, pp. 64–72.
- Lal, H. (1980) – Urban Fringe: Concept and Delimitation, in R.B. Mandal et al. (Ed.), Recent Trends and Concepts in Geography, Vol. II, pp. 121–241.

- Dickinson, R.E. (1930)The Regional Function and Zone of Influence of Leeds and Bradford, Geography, Vol. 15, 1930, pp. 548–557.
- Bracey, H.E. (1953)Towns and Rural Service Centres: An Index of Centrality with special Reference to Somerset, Transactions of the Institute of British Geographers, Vol. 19, pp. 95–105.
- Singh, Ujagir (1966)Allahabad: A Study in Urban Geography, pp. 217–218.
- Alam, M. and Khan (1965)Hyderabad and Sikandrabad Metropolitan Region.
- Prasad, M. (1993) Planning Growth Centres for Integrated Area Development of Bhopal Metropolitan Region.

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

मोहम्मद आसिम **"गोरखपुर नगरीय प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि"** *The Research Dialogue,* An Online Quarterly Multi-Disciplinary Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal, *ISSN: 2583-438X (Online), Volume 4, Issue 2, pp-310-318, July 2025. Journal URL: https://theresearchdialogue.com/*

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2025/31
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

मोहम्मद आसिम

for publication of research paper title

"गोरखपुर नगरीय प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-02, Month July, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY